मेरा कॉलम

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
मो. नं. 73 8657 8657

दूधिया साजिश

अमावस की उस भारी रात में, शहर की आखिरी सीमा पर बसे उस ढाबे की बत्तियां रह-रहकर झपक रही थीं। जब वेटर ने मेज पर वह मटमैली कड़ाही रखी, तो मसालों की तीखी गंध के पीछे से एक ऐसी गंध उभरी जो किसी पुरानी फैक्ट्री के जलते हुए रबर की याद दिला रही थी। तरी के उस लाल खौलते दरिया के बीच वह सफेद क्यूब ऐसे पड़ा था, जैसे किसी कब्रिस्तान की शांति के बीच एक ताज़ा सफेद कफन। मैंने चम्मच उठाया और उसे काटने की कोशिश की, पर वह कटा नहीं। वह तो बस एक तरफ झुक गया, जैसे कोई मृत देह दबाव पाकर अपनी दिशा बदल लेती है। उसकी सतह इतनी चिकनी और कृत्रिम थी कि रोशनी उससे टकराकर वापस लौट रही थी। वह पनीर नहीं था, वह तो दूध के वेश में आया कोई ऐसा सिंथेटिक अभिशाप था जिसे किसी अंधेरी लैब में रसायनों और प्लास्टिक की नसों से बुना गया था।

जैसे ही मैंने उस टुकड़े को थाली के किनारे पर दबाया, एक ऐसी मद्धम और डरावनी आवाज आई जैसे कोई पुराना चमड़ा खींच रहा हो। वह वापस अपनी मूल आकृति में लौट आया, जैसे उसमें कोई अपनी मर्जी की जान बसी हो। उसे देखकर मन में पहला विचार यही कौंधा कि क्या इसे किसी गाय के थन से निकाला गया है या किसी पुराने ट्रक के टायर को पिघलाकर सांचों में ढाला गया है। उसकी सफेदी में वह मासूमियत नहीं थी जो भूख मिटाती है, बल्कि वह भयावह चमक थी जो आगाह कर रही थी कि यहाँ से वापसी का रास्ता बंद है। चम्मच और उस पत्थर जैसे टुकड़े के बीच का वह संघर्ष किसी युद्ध से कम नहीं था, जहाँ जीत हमेशा उस निर्जीव रबर की ही हो रही थी। वह ग्रेवी को अपने शरीर पर ऐसे सरका रहा था जैसे कोई चिकना सांप कीचड़ से निकल जाता है।

जब वह टुकड़ा दांतों के बीच पहुंचा, तो असली भयावहता का अहसास हुआ। वह चबाने पर कटता नहीं था, बल्कि दांतों और मसूड़ों के बीच एक ऐसा तनाव पैदा कर रहा था जैसे कोई किसी मजबूत इलास्टिक को फाड़ने की कोशिश कर रहा हो। उसे जितना दबाया गया, वह उतना ही कठोर और प्रतिरोधी होता गया। ऐसा लगा जैसे मुँह के अंदर कोई जीवित परजीवी प्रवेश कर गया है जो कटने के बजाय आपके जबड़ों की ताकत को ही सोख रहा है। उसकी कोई अपनी पहचान नहीं थी, कोई स्वाद नहीं था, बस एक अंतहीन खिंचाव था जो किसी पुरानी हवेली के जंग लगे दरवाजे के चरमराने जैसा शोर आपके कानों के भीतर पैदा कर रहा था। वह रबर का अहसास जीभ पर एक ऐसी ठंडी सिहरन छोड़ गया जो किसी ठंडे हाथ के स्पर्श जैसी थी।

उसे निगलने का प्रयास उस रात की सबसे बड़ी गलती साबित हुई। वह गले के नीचे उतरा नहीं, बल्कि सरक कर एक ऐसी जगह अटक गया जहाँ से सांस लेना एक चुनौती बन गया। वह पनीर का टुकड़ा आपके भीतर जाकर पिघलने वाला नहीं था, बल्कि वह तो वहां एक स्थाई चुत बनकर स्थापित होने के लिए आया था। पेट के भीतर पहुंचते ही एक ऐसा भारीपन महसूस हुआ जैसे किसी ने पिघला हुआ सीसा डाल दिया हो। वह रबर का घन अब आपके पाचन तंत्र का मजाक उड़ा रहा था। उसे लगा कि वह अब आपकी नसों में सफेद जहर बनकर दौड़ेगा। उसकी बनावट में वह जिद थी जो केवल उन वस्तुओं में होती है जिन्हें जलाया तो जा सकता है पर कभी नष्ट नहीं किया जा सकता। वह आपके भीतर के अंधेरे में एक सफेद चमकता हुआ खौफ बन गया था।

उस ढाबे का सन्नाटा अब और भी गहरा हो गया था। वेटर कोने में खड़ा होकर अपनी सफेद आंखों से मुझे देख रहा था, जैसे उसे पता हो कि जो टुकड़ा मैंने अभी-अभी निगला है, वह मेरी नियति बदलने वाला है। वह पनीर नहीं, एक ऐसा बीज था जिसे रबर के पेड़ों और मरे हुए दूध के मेल से उगाया गया था। मेरी अंतड़ियों में अब एक ऐसा खिंचाव शुरू हो गया था जो असहनीय था। ऐसा महसूस होने लगा कि मेरा शरीर धीरे-धीरे अपनी कोमलता खो रहा है और उसकी जगह वही सख्त, निर्जीव सफेदी ले रही है। हाथ-पैर हिलाना मुश्किल हो गया, जैसे मेरी मांसपेशियों के बीच खून की जगह अब वही पिघला हुआ रबर जमने लगा हो। वह सफेद टुकड़ा अब मेरे पूरे अस्तित्व को अपने जैसा बनाने की साजिश रच चुका था।

सुबह जब सूरज की पहली किरण उस मेज पर पड़ी, तो वहां न कोई ग्राहक था, न वेटर और न वह ढाबा। वहां सिर्फ एक कुर्सी पड़ी थी, जिस पर इंसान के कपड़ों के भीतर रबर का एक आदमकद, सफेद और सख्त पुतला बैठा था। वह पुतला स्थिर था, अभेद्य था और उसकी त्वचा पर मसालों के लाल दाग किसी पुराने घाव की तरह सूखे हुए थे। उस रात पनीर ने मुझे खाया था, मैंने पनीर को नहीं। अब वह रबर का ढांचा ही मेरा नया शरीर था, जो न कभी सड़ेगा, न कभी मरेगा। पास की झाड़ियों से एक सफेद कुत्ता निकला और उसने उस पुतले के पैर को दांतों से काटने की कोशिश की, पर उसके दांत टूटकर गिर गए। वह पुतला अब उस सुनसान सड़क का नया मील का पत्थर था, जो आने वाले हर मुसाफिर को अपनी बेजान, सफेद आंखों से देख रहा था।

अमेज़न पर धूम मचा रहा है उरतृप्त का नया उपन्यास: टॉप 1000 में बनाई जगह

इंदौर समाचार पत्र के प्रसिद्ध कॉलमिस्ट व्यंग्यकार डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा उरतृप्त ने अपनी नवीनतम साहित्यिक कृति यादों में गौरैया के माध्यम से राष्ट्रीय पटल पर एक बड़ी उपलब्धि हासिल कर हिंदी साहित्य का मान बढ़ाया है।

प्रलेक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित इस उपन्यास ने ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म अमेज़न की बेस्टसेलर रैंकिंग में लंबी छलांग लगाते हुए 736वां स्थान प्राप्त किया है, जो इसे देश की शीर्ष 1000 लोकप्रिय पुस्तकों की सूची में शामिल करता है। समकालीन कथा साहित्य और उपन्यास की अत्यंत प्रतिस्पर्धी श्रेणी में, जहाँ हर दिन हजारों नई पुस्तकें बाजार में आती हैं, इस कृति का टॉप 0.5% में जगह बनाना न केवल लेखक की बौद्धिक क्षमता को दर्शाता है, बल्कि पाठकों के उस अटूट भरोसे का भी प्रतीक है जिसने इसे रेकमेंडेड श्रेणी में पहुँचा दिया है। डॉ. मिश्रा, जो इंदौर समाचार के माध्यम से वर्षों से अपनी धारदार लेखनी और अनूठे व्यंग्य से पाठकों के दिलों में एक विशेष स्थान बनाए हुए हैं, ने इस उपन्यास में भी अपनी उसी सहज, सरल और मर्मस्पर्शी भाषा का प्रयोग किया है जो पाठक को आदि से अंत तक बाँधे रखती है। यादों में गौरैया महज एक कहानी नहीं, बल्कि बचपन की उन ओझल होती स्मृतियों, लुप्त होती लोक संस्कृति और हमारी अपनी मिट्टी की सोंधी खुशबू का जीवंत दस्तावेज है, जो आधुनिकता की चकाचौंध में कहीं पीछे छूट गई है। पुस्तक की कथावस्तु में जहाँ एक ओर यादों की गहराई और भावुकता है, वहीं दूसरी ओर लेखक ने समाज की विसंगतियों और मानवीय व्यवहारों पर अपने चिरपरिचित अंदाज में तीखा कटाक्ष भी किया है, जो पाठक को सोचने पर मजबूर कर देता है।

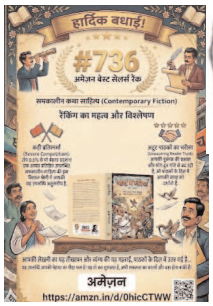

इस उपन्यास की सफलता इस बात का प्रमाण है कि आज के डिजिटल युग में भी यदि विषय वस्तु प्रासंगिक और भाषा हृदयस्पर्शी हो, तो पाठक उसे हाथों-हाथ लेते हैं। डॉ. मिश्रा की यह उपलब्धि इंदौर के गौरव को बढ़ाती है और यह दर्शाती है कि आंचलिक संवेदनाओं को समेटे हुए साहित्य की स्वीकार्यता वैश्विक स्तर पर निरंतर बढ़ रही है। अमेज़न पर निरंतर बढ़ती इसकी मांग और सकारात्मक समीक्षाओं ने इसे एक मस्ट-रीड पुस्तक बना दिया है, जो हर उस व्यक्ति के निजी पुस्तकालय का हिस्सा होनी चाहिए जो साहित्य में यथार्थ, संवेदना और सूक्ष्म हास्य का मिश्रण खोजने का प्रयास करता है। यह उपन्यास न केवल एक लेखक की निजी सफलता है, बल्कि उन तमाम छोटे शहरों की कहानियों की जीत है जो गौरैया की तरह चहचहाने का अवसर ढूंढ रही हैं। डॉ. मिश्रा की यह ऐतिहासिक उपलब्धि आने वाले समय में अन्य साहित्यकारों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनेगी, जो अपनी जड़ों से जुड़कर वैश्विक फलक पर अपनी पहचान बनाने का स्वप्न देखते हैं।

संविधान की रक्षा के लिए कांग्रेस प्रतिबद्ध

आलीराजपुर में धूमधाम से मनाई गई डॉ. अंबेडकर जयंती

आलीराजपुर। भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के अवसर पर जिला कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में आलीराजपुर में भव्य एवं गरिमामयी कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कांग्रेस पदाधिकारी, वरिष्ठ नेता, कार्यकर्ता एवं बड़ी संख्या में आमजन उत्साहपूर्वक शामिल हुए।

कार्यक्रम में जोबट विधानसभा की लोकप्रिय विधायक सेना महेश पटेल ने सहभागिता करते हुए अंबेडकर प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष ओम प्रकाश राठौर सहित कई वरिष्ठ नेताओं की गरिमामयी उपस्थिति रही।

इस अवसर पर विधायक सेना महेश पटेल ने बच्चों के बीच पहुंचकर नुगड़ी (मिठाई) एवं तीखी इमली वितरित की, जिससे बच्चों में खासा उत्साह देखने को मिला। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि डॉ. भीमराव अंबेडकर ने शिक्षा, समानता और न्याय के माध्यम से देश को नई दिशा दी है। उनके विचार आज भी समाज को सशक्त और जागरूक बनाने की प्रेरणा देते हैं।

वहीं पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष ओम प्रकाश राठौर ने अपने उद्बोधन में कहा कि बाबा साहेब का जीवन संघर्ष, त्याग और सामाजिक न्याय का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि बाबा साहेब के सिद्धांतों पर चलना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

कार्यक्रम के दौरान कांग्रेस नेताओं ने एक स्वर में कहा कि देश के संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर के बनाए हुए संविधान की रक्षा के प्रति कांग्रेस पार्टी पूरी तरह प्रतिबद्ध है। नेताओं ने कहा कि समानता, न्याय और लोकतंत्र के मूल्यों को बनाए रखना हम सभी की जिम्मेदारी है और कांग्रेस पार्टी सदैव इस दिशा में कार्य करती रहेगी।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी जनों ने बाबा साहेब के आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाने तथा उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। पूरे आयोजन में श्रद्धा, उत्साह और सामाजिक एकता का अद्भुत संगम देखने को मिला, जिसने अंबेडकर जयंती को एक प्रेरणादायक और यादगार अवसर बना दिया।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम : सांसद अनिता चौहान का भारतीय स्त्री शक्ति इकाई ने किया भव्य स्वागत

आलीराजपुर नि.प्र.। केंद्र सरकार द्वारा 21वीं सदी के ऐतिहासिक निर्णय 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' को पारित करने के उद्देश्य से आयोजित संसद के विशेष सत्र में सम्मिलित होने के लिए प्रस्थान करने से पूर्व आलीराजपुर-झाबुआ-रतलाम क्षेत्र की लोकप्रिय सांसद श्रीमती अनिता नागर सिंह चौहान का भव्य अभिनंदन किया गया। भारतीय स्त्री शक्ति आलीराजपुर इकाई द्वारा आयोजित इस सम्मान समारोह में सांसद महोदया का आत्मीय स्वागत कर उन्हें आगामी सत्र के लिए शुभकामनाएं दी गईं।

परंपरागत स्वागत और सम्मान

इकाई की अध्यक्षा नीरजा चंदेल एवं उनकी टीम ने सांसद महोदया को पुष्प माला पहनाकर और दुपट्टा ओढ़ाकर उनका सस्सम्मान स्वागत किया। इस अवसर पर उन्हें क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक आदिवासी गुड़िया का जोड़ा भेंट स्वरूप प्रदान किया गया। नारी शक्ति की एकजुटता को दर्शाते हुए टीम ने इस ऐतिहासिक अधिनियम के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्र सरकार का आभार भी व्यक्त किया।

इनकी रही गरिमामयी उपस्थिति

शुभकामनाओं के इस गौरवशाली क्षण में भारतीय स्त्री शक्ति इकाई आलीराजपुर की अध्यक्ष नीरजा चंदेल, सचिव सुधा राठौड़, सदस्य संगीता अगाल, नेहा राठौड़, मंजू रावत, पदाधिकारी एवं सदस्य मुख्य रूप से उपस्थित रही। सांसद अनिता चौहान ने इस खेदपूर्ण विदाई और शुभकामनाओं के लिए पूरी टीम का आभार व्यक्त किया और विश्वास दिलाया कि यह अधिनियम महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा।

नागदा में गूंजा नारी शक्ति का संदेश, भव्य सम्मेलन में महिलाओं के सशक्तिकरण पर जोर

नागदा जं. निप्र। नगर पालिका परिषद नागदा द्वारा सोमवार को स्थानीय डे-केयर सेंटर में नारी शक्ति वंदन सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को सशक्त बनाना तथा उन्हें समाज के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना रहा।

सम्मेलन का शुभारंभ विधायक डॉ. तेज बहादुर सिंह चौहान एवं नपाध्यक्ष श्रीमती संतोष ओपी गेहलोत की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ विधि-विधान से की गई। इसके पश्चात अतिथियों का सांसद एवं अध्यक्ष प्रतिनिधि ओ.पी. गेहलोत द्वारा पुष्पमालाओं से स्वागत किया गया।

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों एवं वक्ताओं ने नारी शक्ति के महत्व पर अपने विचार व्यक्त करते हुए महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने एवं समाज में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। वक्ताओं ने कहा कि छतमदकतं डवकप के नेतृत्व में महिलाओं के उत्थान हेतु अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं, जिनका लाभ देश की महिलाओं तक पहुंच रहा है।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का लाइव प्रसारण भी किया गया, जिसे जनप्रतिनिधियों एवं उपस्थितजनों ने उत्साह एवं गंभीरता के साथ सुना। संबोधन में महिलाओं की भूमिका, आत्मनिर्भरता तथा सशक्त भारत के निर्माण पर विशेष जोर दिया गया।

सम्मेलन के दौरान आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं संबंधित अधिकारियों का सम्मान कर उनके योगदान की सराहना की गई। कार्यक्रम में उत्साह, सम्मान एवं सकारात्मक ऊर्जा का वातावरण देखने को मिला। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष प्रकाश जैन, उपाध्यक्ष सुभाषचंद शर्मा, सभापति बबीता रघुवंशी, भावना रावल, रामकुंवर सिसोदिया, पार्षद बिट्टू यादव, महामंत्री दौलतराम प्रजापत, युवा मोर्चा महामंत्री भवानी देवड़ा, ओपी चौहान, पूर्व पार्षद नरेंद्र कोठारी, छोटेलाल मल्हार, श्रीराम शर्मा, सुभाष रावल सहित बड़ी संख्या में पार्टी पदाधिकारी, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं महिला कार्यकर्ता उपस्थित रहीं।

इस आयोजन को नारी शक्ति वंदन पखवाड़ा के रूप में मनाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत पदयात्रा, मिशन शक्ति, व्याख्यान एवं सभाओं जैसी विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। इसी क्रम में एक रैली भी निकली गई जिसको विधायक जी ने हरी झंडी देकर रवाना किया। नगर पालिका परिषद द्वारा आयोजित यह सम्मेलन महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में देखा जा रहा है। वक्ताओं ने कहा कि नारी शक्ति ही समाज और राष्ट्र की प्रगति की आधारशिला है।

बाबा साहेब का जीवन हम सभी के लिये सदैव प्रेरणा स्त्रोत है – जिलाध्यक्ष धाकड़

नागदा जं. निप्र। भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकरजी की जयंती पर नागदा में नगर पालिका परिषद द्वारा आयोजित नागदा स्थित पुराना बस स्टेण्ड पर भाजपा जिलाध्यक्ष राजेश धाकड़ व विधायक डॉ. तेजबहादुरसिंह चौहान की उपस्थिति में बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर समता और न्याय के प्रतीक बाबा साहेब को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष श्री राजेश धाकड़ ने उनके महान विचारों, संघर्ष और सामाजिक कार्य के लिये किये गये अतुलनीय योगदान को स्मरण किया। उन्होने कहा कि बाबा साहेब का जीवन हम सभी के लिये सदैव प्रेरणा स्त्रोत है। उनके बताये मार्ग पर चलकर समता ओर न्यायपूर्ण समाज का निर्माण करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। बाबा साहेब ने हमें संविधान के रूप में एक मजबूत आधार दिया। उनके विचार ''शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो'' आज भी हम सबके लिये प्रेरणा है।

ग्राम पंचायत भागसरा में मनाई अम्बेडकर जयंती, जल संरक्षण का दिया संदेश

भागसरा। ग्राम पंचायत भागसरा में भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 135वीं जयंती बड़े ही उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों द्वारा भारत माता एवं बाबा साहब के छायाचित्र पर माल्यार्पण कर की गई। इस अवसर पर वक्ताओं ने बाबा साहब के जीवन, संघर्ष और संविधान निर्माण में उनके योगदान पर प्रकाश डाला। जितेंद्र धाकड़ ने अपने संबोधन में डॉ. अम्बेडकर की जीवनी एवं उनके विचारों से उपस्थित ग्रामीणों को अवगत कराया। कार्यक्रम में वॉटर हैट संस्था के जिला समन्वयक दिलीप सिंह रावत ने जल संरक्षण, दूषित जल से होने वाली बीमारियों तथा जल बचाव के उपायों पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने ग्रामीणों से जल संरक्षण को जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाने की अपील की। कार्यक्रम का संचालन जन अभियान परिषद की नवांकुर संस्था शिव मोहिनी सामाजिक सेवा समिति के अध्यक्ष नितेश कोटडिया द्वारा किया गया। इस दौरान शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी भी ग्रामीणों को दी गई। कार्यक्रम में शंकर सिंह, अनोखी लाल, सोबाल अवल्लादिया, नेहा कोटडिया, जमना बाई सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे। जयंती समारोह हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ और अंत में सभी को जल संरक्षण हेतु शपथ दिलाई गई।

संघ के शताब्दी वर्ष पर प्रमुख जन गोष्ठी का हुआ आयोजन

पंच परिवर्तन को अपनाकर देश को सुरक्षित रखना है- अभिषेक गुप्ता

सोनकच्छ। संघ के शताब्दी वर्ष में देशभर में प्रमुख जन गोष्ठियों का आयोजन हो रहा है। इसी क्रम में सोनकच्छ एवं पीपलरावा खण्ड की प्रबुद्ध जन गोष्ठी का आयोजन सोनकच्छ के माधव मांगलिक परिसर में संपन्न हुआ।

इस गोष्ठी में मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मालवा प्रांत के सह व्यवस्था प्रमुख अभिषेक गुप्ता के साथ सोनकच्छ खण्ड संघचालक सतीशचंद्र तिवारी एवं पीपलरावा खण्ड संघचालक योगेंद्र दांगी मंचासीन थे। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा भारत माता के चित्र पर पुष्पांजली अर्पित कर एवं दीप प्रज्वलन कर हुआ।

प्रमुख जन गोष्ठी के मुख्यवक्ता अभिषेक गुप्ता जी ने गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए संघ की स्थापना की पृष्ठभूमि को समझाया, साथ ही संघ के संस्थापक केशव बलिराम हेडगेवार के जीवन से परिचय पर प्रकाश डाला। संघ की 100 वर्षों की यात्रा के बारे गुप्ता ने बताया की स्थापना के बाद से संघ के स्वयंसेवकों ने समाज जीवन जैसे शिक्षा, सेवा, श्रम, किसान, महिला सशक्तिकरण आदि में विभिन्न संगठनों का कार्य भी प्रारंभ किया जिनमें स्वयंसेवकों ने सदैव राष्ट्रीय सुरक्षा एवं राष्ट्रीय एकता का महत्व दिया है। स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर देश विभाजन तक संघ की भूमिका का उल्लेख करते हुए बताया कि विभाजन के समय संघ के स्वयंसेवकों ने अपने प्राणों की चिंता किए बिना हजारों हिंदू परिवारों को सुरक्षित भारत लाकर बसाने का कार्य किया, साथ ही 1962 के भारत-चीन युद्ध तथा 1971 के भारत-पाक युद्ध सहित जब-जब देश पर संकट आया, संघ के स्वयंसेवकों ने राष्ट्रसेवा का उच्चतम उद्धरण प्रस्तुत किए। गुप्त ने संघ के शताब्दी वर्ष में सभी पंच परिवर्तन को अपनाने का आह्वान किया। इसमें नागरिक शिष्टाचार, पर्यावरण संरक्षण, कुटुंब प्रबोधन, सामाजिक समरसता तथा 'स्व' के बोध जैसे विषयों को अपनाकर समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की प्रेरणा दी।उन्होंने बताया कि देश को परम वैभव तक ले जाने के लिए समाज के प्रमुख जनों को साथ मे कार्य करने की आवश्यकता है इसमें ही देश की सुरक्षा निहित है।जिज्ञासा-समाधान सत्र में युवा प्रतिभागियों ने गुप्ता से संघ एवं समाज से सम्बंधित विभिन्न विषयों अपनी प्रश्न के रूप में जिज्ञासाएं प्रकट की जिसका समाधान एवं उत्तर गुप्ता ने दिया । कार्यक्रम का समापन वंदे मातरम गान के साथ हुआ।